॥ श्री ॥

आप्तमीमांसा

AAPTAMIMAANSAA

आ. समन्तभद्र · ४वीं शती · अभिलेख १४/९०

आ. समन्तभद्र → श्री पात्र केसरी स्वामी

संक्षिप्त परिचय

स्वामी समन्तभद्र की दार्शनिक अमर कृति — सच्चे आप्त (सर्वज्ञ वीतराग) की कसौटी और एकान्त मतों की परीक्षा करते हुए स्याद्वाद-सप्तभंगी की प्रतिष्ठा।

देवागम-स्तोत्र नाम से भी प्रसिद्ध; इस पर अकलंकदेव की अष्टशती और विद्यानन्द की अष्टसहस्री जैसी महाटीकाएँ रची गईं।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

आप्तमीमांसा — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक १४ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. समन्तभद्र; रचना-काल ४वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक ६८) के अनुसार इनका समय १२०–१८५ है। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "आप्तमीमांसा/आदि अनेकग्रंथ" उल्लिखित है। इसी लेखनी से रत्नकरण्ड श्रावकाचार, युक्त्यनुशासन, स्वयम्भूस्तोत्र, देवागमस्तोत्र, जिनशतक, द्वात्रिंशिका भी इस सूची में सम्मिलित हैं।

इसी लेखनी से

रत्नकरण्ड श्रावकाचार · युक्त्यनुशासन · स्वयम्भूस्तोत्र · देवागमस्तोत्र · जिनशतक · द्वात्रिंशिका

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति १४ — मूल छायाचित्र

← रत्नकरण्ड श्रावकाचार

युक्त्यनुशासन →